Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 1 | Oct - 2015

काव्य बिंब का स्वरूप तथा परिभाषा

डॉ. विनयकुमार एस. चौधरी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना :

मनुष्य अपने समय के बाह्य जगत् में घटने वाली विविध परिस्थितीयों की, सौंदर्य की अनुभूति प्राप्त कर लेता है। सभी मनुष्य इस अनुभूति को व्यक्त करने में सक्षम नहीं होते। सृजन शक्ति संपन्न युक्त मनुष्य ही अपनी अनुभूति को कला में अभिव्यक्त करता है। संसार की सभी कलाओं में काव्य को ऊँचा स्थान प्राप्त है। क्योकिं वह भावाभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। कवि अपने समसामायिक परिस्थितीयों से जूझता जाता है, अपनी संवेदना अनुभूत करता है। उसी संवेदनात्मकता की अनुभूति अभिव्यक्ति कविता है। अपने संवेदना के जटिल भावों को 'शब्द' द्वारा अभिव्यक्त करता है। 'आचार्य भामह ' के मतानुसार 'शब्दार्थो सहितो काव्यम' है। इसी के द्वारा काव्य का अनिर्वचनीय आनन्दकी अनुभूति होती है। काव्य के आनंद को ब्रह्मानंद भी कहा गया है।

कवि अपने काव्य का सार्थक अभिव्यंजन के लिए बिंब तथा प्रतीक आदि माध्यम का चयन करता है। विशेषकर आधुनिक काल के कवियों ने इसे स्वीकृत किया है। कवि का अनुभव परिवेश, जीवनविषयक दृष्टिकोण, विचार, भाव, समस्त स्थितियों का अध्ययन, आदि संचेतना के स्तर पर आकर कल्पना का स्पर्श पाकर सशक्त शब्द और अर्थ को माध्यम बनाकर विविध काव्यशक्ति द्वारा अभिव्यक्त होनेवाला विषय काव्य है। ऐसा काव्य पाठक को सुगम्य होता है। उसे ब्रह्मानंद प्रदान करता है।

❖ बिंब का स्वरूप : –

• बिंब शब्द का व्युत्पत्तिगत अर्थ :–

बिंब का शब्दार्थ है– 'चित्र, रूप, आकृति, प्रतिमा, छाया, अनुकृति, सादृश्य, परछाई, प्रतिमूर्ति आदि। (मानक हिंदी कोश, चौथा खंड, संपा. रामचंद्र वर्मा पृ. 126)

बिंब शब्द अंग्रेजी के इमेज (Image) का पर्याय है। इस अंग्रेजी के इमेज शब्द की व्युत्पत्ति लॅटिन के Imago से हुई है। अंग्रेजी के प्रामाणिक कोशों के अनुसार इस इमेज शब्द के अर्थ प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, अथवा प्रतिमूर्ति है। आधुनिक अर्थ में भी यह अपने इसी मौलिक अर्थ को धारण किये हुए है 'इंद्रियों की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का साकार प्रतिरूप उसी प्रकार दर्पण में पडे हुए किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रतिबिंब को उसका बिंब कहा जाता है।' (छायावादोत्तर हिंदी काव्य में बिंब विधान– डॉ. उषा जैन पृ. 13)

बिंब की परिभाषा :–

कवि अपनी मार्मिक अनुभूतियों भावनाओं और विचारों को सहृदय पाठक तक सम्प्रेषित करने के लिए बिंबों का सृजन करता है। लेकिन बिंब की कोई एक सर्वमान्य, सार्वकालिक परिभाषा नहीं हो सकी है, क्योंकि काल, परिवेश, विचार और कवि (सृजक) विशेष आदि के आधार पर अभिव्यक्ति होती रहती है। काव्य में बिंब का कार्य उसका महत्व, स्थायित्व और सौंदर्य प्रदान करना है। बिंब कविता के विषय को, भावों उसके परिवेश को सशक्त बानाते हैं। भारतीय और पाश्चात्य कवियोंने काव्य में बिंब को जाने अनजाने प्रतिष्ठा दी है।' बिंब' के स्वरूप निर्धारित करने के संदर्भ में एकवाक्यता नहीं है। अरस्तु और क्लिथ ब्रुस्स ने 'रूपरू' को काव्य में स्थान दिया है। बिंब को संकुचित अर्थ में 'दृश्यता की ध्वनि' कहा जाता है। किन्तु आधुनिक काल की आलोचना में नवीन परिभाषाओं के कारण व्यापक अर्थ प्रदान करता है। वह दृश्य, श्राव्य, घ्रातव्य, स्पर्श, आस्वाघ और अनुमेय सबको अपने में समेटेहुए है। पाश्चात्य आलोचकों ने काव्य बिंब को परिभाषाओं में बाँधने का प्रयास किया है।

इनमें कुछ उसके स्वरूप निर्धारण के संबंध में, कुछ उसके अर्थ व्याप्ति के, कुछ निर्माणात्मक तत्वों से और कुछ उससे उत्पन्न प्रभाव से।

• विभिन्न कोश तथा पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषा :–

अंग्रेजी भाषा कोशों में बिंब की परिभाषाएँ मिलती है।

- 'चेम्बर्स टपान्टियथ सेंचुरी डिक्शनरी' में चाक्षुष प्रतिकृति को बिंब माना है–
  'कल्पना या स्मृति में प्रत्यक्ष चित्र अथवा प्रतिकृति जिसका चाक्षुष होना अनिवार्य नहीं।'
  केम्ब्रिज इंटरनॅशनल डिक्शनरी में बिंब को मानसिक चित्र माना है–
  'किसी वस्तु या व्यक्ति की सदृश्यता का मानसिक चित्र।'(केंब्रिज इंटरनॅशनल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश, पृ. 704)
- 'वेबस्टर्स न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी' में बिंब को व्यक्ति या वस्तु को प्रतिकृति माना है–
  'व्यक्ति या वस्तु की प्रतिकृति या अनुकृति बिंब है।'(वेबस्टर्स न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी पृ. 572)
- वेबस्टर्स एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लेंग्वेज में बिंब 'किसी पूर्वग्रहित वस्तु की मानसिक प्रतिकृति है।'(वेबस्टर्स एनसाइक्लोपीडिक डिक्शनरी पृ. 955)
- युनिवर्सल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश यूसेज में वस्तु या व्यक्ति का समूर्त प्रतिनिधि बिंब कहा गया है–
  'बिंब व्यक्ति या वस्तु का समूर्त प्रतिनिधि है।'
  (युनिवर्सल डिक्शनरी पृ. 581)
- एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटीनिका में बिंब की परिभाषा इस प्रकार है–
  'बिंब सचेतन यादें हैं जो किसी पूर्वग्रहित धारण का पुनर्रंकन करता है।'
  (एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटानिया खंड–12 पृ. 612)
- कुब्ज ने बिंब को 'फिगर ऑफ स्पिच' का पर्याय माना है।
  (काव्य सृजन प्रक्रिया और निराला –डॉ. शिवकरण सिंह पृ. 432)
  स्टीफन ब्राउन के अनुसार 'रूपक, उपमा, मानवीकरण, स्त्रिकेडोक, मेटोनिमी, समासोक्ति, मुहावरें, लोककथा, प्रतीक, चिन्ह सब यदिं किसी एक सामान्य शीर्षक के अन्तर्गत रखे जा सकते हैं, तो वह है बिंब। (छायावादोत्तर काव्य में बिंब विधान – डॉ. उषा जैन पृ. 14)
- एजरा पाउण्ड के अनुसार 'बिंब वह है जिसके द्वारा निमिष–मात्र में बौध्दिक तथा संवेदनात्मक जटिलता का उद्घाटन हो जाए।' (अज्ञेय के काव्य में बिंब– डॉ. टी. शांतकुमारी पृ. 46)
- सी.डी. लेविस ने 'पोयटिक इमेज' में बिंबो की एंद्रियता का उद्घाटन करते हुए लिखा– ''काव्य–बिंब शब्दों द्वारा प्रयुक्त ऐंद्रियचित्र है। वह कुछ हद तक मानवीय भावना प्रेरित रूपात्मकता को अपने में स्थान देता है। साथ साथ वह एक वि"ोष प्रकार की भावना से पूर्ण होकर इसी भावना को सहृदय–ग्राह्य बना देता है। इस परिभाषा में लेविस ने बिंब की मूर्तिमत्ता और संप्रेक्षण क्षमता पर जोर दिया है। '' (सी.डी. लेविस पोयटिक इमेज पृ.22) इस परिभाषा में लेविस ने बिंब की मूर्तिमत्ता और संप्रेषण क्षमता पर जोर दिया है।

सुप्रसिध्द कवि कालरिज की व्याख्या करते हुए ए.ए. रिचर्डस ने लिखा है– ''बिंब किसी दृश्य बिंब, किसी संवेदन का अनुकरण, किसी, भाव, मानसिक घटना, अलंकार या वस्तुओं की ईकाई हो सकता है।'' कालरिज की परिभाषा में बिंब की सभी विशेषताओं का उद्घाटन हुआ है। (अज्ञेय के काव्य में बिंब –डॉ. टी. शांतकुमारी पृ. 46)

बिंब का समर्थन करते हुए टी. ई. हयूम ने कहा कि बिंब केवल काव्य का अलंकार मात्र नहीं लेकिन सहज स्फूर्त अभिव्यक्ति की भाषा है। इन्होंने भाव–संप्रेषण में बिंब की महत्वपूर्ण भूमिका पर विशेष बल दिया है।

एजरा पाउण्ड, ब्लॅक, ड्राउडन, हर्बर्ड्र रीड, करोलिन स्पेर्जियन, वर्डसवर्थ जैसे कई आचार्यो ने बिंब की संप्रेषण शक्ति और इंद्रिय संवेदना के साथ उसकी चित्रात्मक अभिव्यक्ति को महत्वपूर्ण माना है। रोजमण्ड तुव की परिभाषा में इसी विशेषता की मुख्यता दी गई है– ''कवि की संवेदनाएँ जब चित्रात्मक अभिव्यक्ति का रूप धारण करती है, तभी बिंब की सृष्टि होती है।'' (अज्ञेय के काव्य में बिंब– डॉ. शांतकुमारी पृ. 46)

पश्चात्य साहित्य में प्रतीकवाद की प्रतिक्रिया के रूप में बिंबवाद की उत्पत्ति हुई। आचार्यो ने बिंब को वस्तु की अनुकृति मानी उसे इंद्रियप्रत्यक्ष सहज स्फूर्त अभिव्यक्ति स्वीकार किया जिसके द्वारा तीक्ष्ण भावनाएँ अनुभूति गम्य हो सकती है। यह अनुभूति चित्रात्मक है, अतः भाव–सम्प्रेषण में ऐंन्द्रजातिक का काम कर सकती है।

• भारतीय विद्वानों की परिभाषा :–

भारतीय आलोचना रससिध्दांत पर आधारित है। इसी कारण वह काव्यालोचना का विषय नहीं रहा है। लेकिन पाश्चात्य बिंबवाद से प्रभावित आधुनिक आलोंचकों ने काव्य के उपादन के रूप में बिंब को महत्वपूर्ण स्थान दिया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने काव्य में बिंब ग्रहण की अपेक्षा स्वीकार की बाद में डॉ. केदारनाथ सिंह ने 'आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान' नामक ग्रंथ में काव्य प्रतिमान के रूप में बिंब की महत्वपूर्ण भूमिका की व्याख्या की है। छायावादी कवियों ने बिंबो की सौंदर्यवादी लड़ी तैयार की। लेकिन बिंब शब्द का प्रयोग उस समय नहीं मिलता। प्रयोगवादी कवियों ने बिंब की विस्तृत व्याख्या करते हुए उसे शैली शिल्प के प्रमुख तत्त्व के रूप में ग्रहण किया । भारतीय विद्वानों ने बिंब की परिभाषा निम्नांकीत की है। कवि अपने काव्य विषय को मूर्त स्वरूप प्रदान करने के लिए बिंब ग्रहण करता है। वह काव्य का अनिवार्य तत्त्व हो जाता है। इसी बात को आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने चिंतामणी भाग –1 में लिखा है– ''काव्य में अर्थ ग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, बिंब ग्रहण अपेक्षित होता है। यह बिंब ग्रहण निर्दिष्ट, गोचर और मूर्त विषय का ही हो सकता है।''(आ. रामचंद्र शुक्ल चिंतामणी भाग –1 पृ. 145)

डॉ. केदारनाथ सिंह के अनुसार – ''कवि मानव मन के सहज, अकृत्रिम, गतिशील, जटिल संवेगों का भाषा के जीवन्त माध्यम के द्वारा शाब्दिक पुनर्निमाण करता है तो समिक्षा की आधुनिक पदावली में उसे बिंब विधान कहते हैं। (डॉ. केदारनाथ सिंह –आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान पृ.49)और एक जगह पर डॉ. केदारनाथ जी लिखते है– ''बिंब वह शब्द चित्र है जो कल्पना के द्वारा ऐंद्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता हैं। (डॉ. केदारनाथ सिंह –आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान पृ.23) डॉ. कुमार विमल के अनुसार –''बिंब विधान कलाकार का ऐसा संवेग संकुल प्रयास है, जिसमें वह विविध अथवा विपरित वस्तुओं, मन स्थितिओं और धारणाओं को जो सामान्यतः विछन्न और अर्थहीन लगती है। अपनी कल्पना शक्ति से परस्पर मिलाकर एक नविन संदर्भ तथा अनुक्रम देता है। (डॉ. कुमार विमल –सौंदर्य शास्त्र के तत्त्व पृ. 203)

परिभाषा में बिंब की संयोजन शक्ति पर बल दिया है तथा काव्य सौंदर्य संवर्धक तत्त्व के रूप में बिंब का विश्लेषण किया है। डॉ. नगेंद्र के अनुसार– '' काव्य बिंब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित ऐसी मानस छबी है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है। (डॉ. नगेंद्र : काव्य बिंब पृ. 135) इस परिभाषा द्वारा डॉ. नगेंद्र ने काव्य बिंब की भाव तीक्ष्यणता पर बल देते हुए भाव, कल्पना, सौंदर्य, शब्दार्थ, आदि की समग्रता को बिंब माना है। डॉ. देवराज के अनुसार– '' काव्य में दो ही प्रमुख तत्त्व होते हैं। – अनुभव जगत से उठाए हुए बिंब या चित्र और उन चित्रों का अर्थ पूर्ण संगठन । (डॉ. देवराज : युग चेतना, अक्तूबर सं. उधर की हिंदी कविता पृ. 25) डॉ. रामयतन सिंह 'भ्रमर' के अनुसार – ''कोई भी साधारण बात यदि रूप विधान के घूँघट से झाँकती है तो वह असाधारण और सुंदर प्रतीन होने लगती है ।(डॉ. रामयतन सिंह 'भ्रमर' – आधुनिक हिंदी कविता में चित्र विधान पृ. 03)

डॉ. धर्मशीला भुवालका के अनुसार – ''काव्य बिंब चेतन, अवचेतन मानस से उद्भूत भावोद्रिक्त कल्पना सर्जित शब्दार्थ स्पर्धी वह ध्वनि चित्र है जिसमें औचित्य के शासन में व्यक्ति एवं समीक्रत होते हैं। (डॉ. धर्मशीला भुवालका– काव्य बिंब और कामायनी की बिंब योजना पृ.5) दिनकर जी ने '' चित्रमयता को काव्य का एकमात्र अविछिन्न गुण माना है। (रामधारी सिंह 'दिनकर' चक्रवाल भूमिका पृ. 7) श्री. ओमप्रकाश अवस्थी के मतानुसार – ''बिंब इंद्रिय जनीत संवेदनाओं की कल्पनात्मक अभिव्यक्ति है। इस प्रकार का मूर्त और अमूर्त किसी प्रकार के हो सकती है। अनुभव की इंद्रिय जन्य चेतना जितनी मुखर होगी उस इंद्रिय का बिंब भी उतना ही सशक्त होगा।''(डॉ. ओमप्रकाश अवस्थी : नयी कविता –रचना प्रक्रिया पृ. 104)

आधुनिककवि और आलोचक बिंब को काव्य का सौंदर्य बढानेवाला तत्त्व स्वीकार करते हुए बिंब की महत्त्व पूर्ण भूमिका का विश्लेषण करते हैं। श्रेष्ठ बिंब काव्य को चित्र जैसी कलात्मकता प्रदान उसे अपूर्व सौंदर्य युक्त बनाते हैं।

पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों के मत अवलोकन करने से बिंब काव्य वस्तु के संप्रेषण का सशक्त उपादान सिध्द होता है। बिंब में मानविय संवेदना और रागात्मकता होती है। उसी तरह भावों और संवेगों का संक्षेपण और संघटन होता है। इसीलिए यह काव्य वस्तु की गहनता को बढाकर जिवंत और शाश्वत बनाता है। यह इंद्रिय संवेद्य होने के कारण अनुभूति सूक्ष्मता प्रदान करता है। यह मूर्त को अमूर्त और अमूर्त को मूर्त बनाने में सक्षमहै। बिंब की संप्रेषण शक्ति अद्भूत है। इसी कारण वह काव्य के प्राणतत्व से जुडा है। उसमें संक्षिप्तता और व्यंजनात्मकता के गुण है। बिंब रचना की काव्य भाषा सशक्त होती है। वह काव्य की संवेदनात्मकता से जुड़कर रसानुभूति को सक्षम बनाता है। तो दूसरी ओर कला पक्ष को संपन्न बनाता है। संक्षेप में काव्य बिंब कल्पना के द्वारा प्रस्तुत वह शब्द चित्र है, जो विषय वस्तु को सहज अभिव्यक्त करता है।